01 JANUARY 2021

PT CARD

# जियो-इंजीनियरिंग (Geo-Engineering)

- जलवायु इंजीनियरिंग या जियो-इंजीनियरिंग (Geoengineering) सामान्यत: ग्लोबल वार्मिंग के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के उद्देश्य से पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में किया जाने वाला सुधारात्मक हस्तक्षेप है। यह तकनीक प्रमुख रूप से तीन श्रेणियों; **सौर विकिरण प्रबंधन** (Solar Radiation Management), **कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन** (Carbon dioxide Removal) और **मौसम संशोधन** (Weather Modification) के रूप में कार्य करती है।

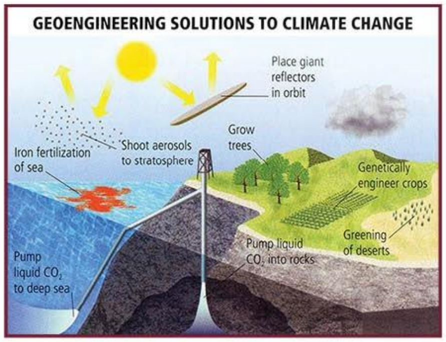


- सौर विकिरण प्रबंधन से तात्पर्य सौर विकिरण को वापस अंतरिक्ष में परावर्तित करके ग्रीनहाउस गैसों के कारण उत्पन्न होने वाले ताप प्रभाव को कम करना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से पृथ्वी के वायुमंडल या सतह के एल्बीडो को तकनीक के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, **जिसमें सोलर ब्राईटनिंग और सौर जियो-इंजीनियरिंग प्रमुख हैं।**
- कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन में वनीकरण के अतिरिक्त उन कृषि पद्धतियों को शामिल किया जाता है, जो कार्बन कैप्चर और भंडारण के रूप में मिट्टी से कार्बन को पृथक कर वायुमंडल से $CO_2$ को कम करती हैं। **महासागर उर्वरीकरण** (Ocean fertilization) इसमें प्रमुख है।
- मौसम संशोधन के अंतर्गत कृत्रिम बारिश, मेघ-बीजन या क्लाउड सीडिंग के द्वारा संघनन या बर्फ के नाभिक के रूप में कार्य करने वाले पदार्थों को फैलाकर और इन्हें सूक्ष्म आकाशीय प्रक्रियाओं में परिवर्तित करके वर्षण की मात्रा या प्रकार में बदलाव लाया जाता है।
- सौर ऊर्जा के सामान्य स्तर पर पृथ्वी तक पहुँचने और परावर्तित होने से ऊष्मा-बजट संतुलित रहता है, जिससे पृथ्वी पर जीवन के लिये उचित परिस्थितियों का निर्माण होता है। लेकिन स्ट्रैटोस्फेरिक सल्फ़ेट एयरोसोल के अधिक उपयोग के कारण ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिससे निपटने के लिये पर्यावरणविद जलवायु इंजीनियरिंग पर काम कर रहे हैं।

02 JANUARY 2021

# PT CARD

## तिहान-आई.आई.टी. हैदराबाद (TiHAN-IIT Hyderabad)

- हाल ही में, केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने **स्वायत्त नौवहन के क्षेत्र में परीक्षण के लिये भारत की पहली प्रणाली (स्थलीय और हवाई) 'तिहान-आई.आई.टी. हैदराबाद'** की आधारशिला रखी।
- गौरतलब है कि मानवरहित तथा सुदूर नियंत्रित वायुयानों के लिये स्वायत्त नौवहन प्रणाली पर आधारित प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र को आई.आई.टी. हैदराबाद में 'तिहान फाउंडेशन' के नाम से जाना जाता है। जून 2020 में इसे सेक्शन-8 कंपनी के रूप में मान्यता दी गई है।

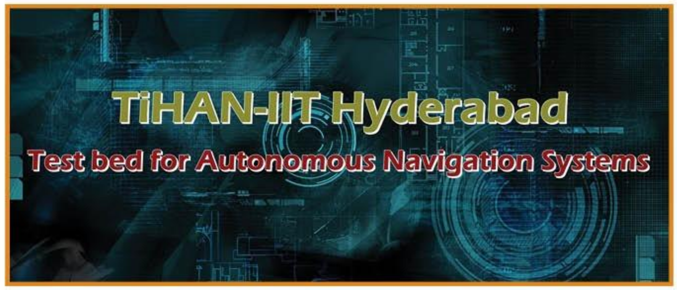


- भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत इंटरडिसिप्लिनरी साइबर-फिज़िकल सिस्टम राष्ट्रीय मिशन (NM-ICPS) के तहत स्वायत्त नेविगेशन और डाटा अधिग्रहण प्रणाली (UAV, RoVs आदि) पर प्रौद्योगिकी नवाचार हब स्थापित करने के लिये आई.आई.टी. हैदराबाद को 135 करोड़ रुपए का अनुदान दिया गया है।
- तिहान फाउंडेशन एक बहु-विभागीय पहल है, जिसमें प्रतिष्ठित संस्थानों और उद्योग के सहयोगकर्ताओं के साथ-साथ आई.आई.टी. हैदराबाद के कई विभागों के शोधकर्ता शामिल हैं। यह 'आत्मानिर्भर भारत, 'स्किल इंडिया' तथा 'डिजिटल इंडिया' की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
- इस प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं में टेस्ट ट्रैक, वास्तविक-विश्व परिदृश्यों का अनुकरण, स्टेट ऑफ़ द आर्ट सिमुलेशन टेक्नोलॉजी, रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर, V2X कम्युनिकेशन, ड्रोन रनवे और लैंडिंग एरिया, मैकेनिकल इंटीग्रेशन फैसिलिटी, सेंट्रलाइज्ड कंट्रोल रूम/ग्राउंड कंट्रोल स्टेशन तथा हैंगर जैसी सुविधाएँ शामिल हैं।

04 JANUARY 2021

# PT CARD

संस्कृति IAS

## क्वांटम रैंडम नंबर जेनरेटर (Quantum Random Number Generator)

- हाल ही में, मुंबई में स्थित रक्षा अनुसंधान विकास संगठन की यंग साइंटिस्ट लेबोरेटरी फॉर क्वांटम टेक्नोलॉजीज़ (DYSL-QT) ने एक 'क्वांटम रैंडम नंबर जेनरेटर' (QRNG) विकसित किया है, जो **यादृच्छिक क्वांटम घटनाओं का पता लगाकर उन्हें बाइनरी अंकों के अनुक्रम में परिवर्तित करने में सक्षम** है। अभी तक इस संदर्भ में उपयोग की जा रही ज्ञात पद्धतियों से सटीक यादृच्छिकता को प्राप्त करना सामन्यत: असंभव है।

- यह जेनरेटर, फाइबर ऑप्टिक्स के 'फोटॉन-बीम स्प्लिटर टकराव' क्रियाविधि पर कार्य करता है। फोटॉन द्वारा चुना गया पथ यादृच्छिक (Random) होता है तथा यादृच्छिकता को बाइनरी अंकों में अनुक्रमित किया जाता है, जिसे 'बिट्स' भी कहा जाता है।
- **क्वांटम यांत्रिकी में वास्तविक यादृच्छिक संख्याएँ प्रदान करने की अंतर्निहित क्षमता** होती है। इस कारण इसे यादृच्छिकता की आवश्यकता वाले वैज्ञानिक अनुप्रयोगों के लिये महत्त्वपूर्ण विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। इस विकास के बाद भारत उन देशों में शामिल हो गया है, जिनके पास क्वांटम घटना के आधार पर यादृच्छिक संख्या की पीढ़ी को प्राप्त करने की तकनीक है।
- विदित है कि क्वांटम संचार, क्रिप्टोग्राफी एप्लिकेशन, प्रमाणीकरण, वैज्ञानिक सिमुलेशन, लॉटरी और मौलिक भौतिकी प्रयोग में यादृच्छिक संख्याओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- DYSL-QT डी.आर.डी.ओ. की पाँच यंग साइंटिस्ट लेबोरेटरीज़ में से एक है, जो पाँच अलग-अलग तकनीकों पर काम कर रही हैं। डी.आर.डी.ओ. की 4 अन्य यंग लेबोरेटरीज़– अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (DYSL-AI) बेंगलुरु, कॉग्निटिव टेक्नोलॉजी (DYSL-CT) चेन्नई, असममित टेक्नोलॉजी (DYSL-AT) कोलकाता, स्मार्ट मटीरियल्स (DYSL-SM) हैदराबाद हैं। इन्हें जनवरी 2020 में राष्ट्र को समर्पित किया गया था।

## बनाना ग्रिट (Banana Grit)

- हाल ही में, केरल के पप्पनमकोड में सी.एस.आई.आर.- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी (NIIST) के वैज्ञानिकों ने कच्चे नेंड्रान केले से एक नया उत्पाद 'बनाना ग्रिट या ग्रैन्यूल' विकसित किया है। यह रवा और टूटे हुए गेहूँ जैसा दिखता है। इस तकनीक को कोच्चि स्थित 'मोज़ा ऑर्गेनिक' (Moza Organic) को हस्तांतरित कर दिया गया है, उत्पाद शीघ्र ही बाज़ार में आ जाएगा।

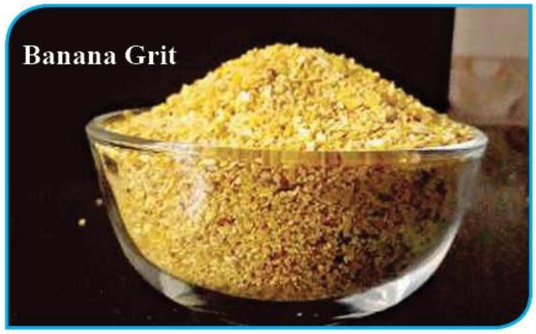


- एन.आई.आई.एस.टी. के अनुसार, 'बनाना ग्रिट' का उपयोग स्वस्थ आहार के आदर्श घटक के रूप में व्यंजन तथा स्वास्थ्यवर्धक पेय बनाने के लिये किया जा सकता है। ध्यातव्य है कि केले में उपस्थित प्रतिरोधी स्टार्च स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होता है, जिसका उपयोग करने के लिये इसकी शुरुआत की गई थी।
- केला ग्रिट और इसके उपोत्पाद से तैयार व्यंजन पाचन की दृष्टि से लाभकारी होने के कारण वैज्ञानिक समुदाय अब स्वास्थ्य और कल्याण के लिये व्यापक रूप से इस ओर ध्यान दे रहे हैं।
- चेंगलिकोडन नेंद्रन केला (Changalikodan Nendran) या चेंगलिकोडन (Changalikodan) के नाम से प्रसिद्ध केला केरल के त्रिशूर ज़िले में चेंज़ाझिकोडु (Chengazhikodu) गाँव में उत्पादित केले की एक किस्म है। चेंगलिकोडन की खेती अब भरतपुझा नदी के किनारे पर की जाती है, इसे चेन्नई से भौगोलिक संकेतक (G. I. Tag) प्राप्त हुआ है। सामन्यत: केरल के व्यंजन जैसे– एवियल और थोरन में पके हुए नेंद्रन केले का उपयोग किया जाता है।

# मोरिंगा पाउडर (Moringa Powder)

- हाल ही में, वाणिज्य मंत्रालय ने मोरिंगा पाउडर की बढ़ती वैश्विक माँग और पोषण गुणों को ध्यान में रखते हुए इसका निर्यात शुरू कर दिया है। **इसका वानस्पतिक नाम 'मोरिंगा ओलीफेरा'** है। इसे सहजन, ड्रमस्टिक, हॉर्सरैडिश, बेन ऑयल या बेंज़ोलिव ट्री नामों से भी जाना जाता है। **भारत मोरिंगा पाउडर का सबसे बड़ा उत्पादक** है।
- मोरिंगा **जंगलों में तेज़ी से विकसित होने वाला सूखा प्रतिरोधी पेड़ है, जो भारतीय मूल के मोरिंगसेई परिवार से संबद्ध** है। साथ ही, मध्य अमेरिका व कैरिबियाई देशों, उत्तरी अमेरिका के दक्षिणी देशों, दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और ओशेनिया में भी इसकी खेती की जाती है।

- इसके **पोषकीय व औषधीय गुणों तथा भोजन पकाने में उपयोग** के चलते विश्व स्तर पर मोरिंगा लीफ पाउडर और मोरिंगा ऑयल जैसे उत्पादों की माँग में वृद्धि देखी गई है। इसमें एंटीफंगल, एंटीवायरल, एंटीडिप्रेसेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। **इसका उपयोग मुख्यतः स्वास्थ्य, सौंदर्य प्रसाधन तथा रोग निदान के लिये** किया जाता है।
- मोरिंगा में कई स्वास्थ्यवर्धक यौगिक, विटामिन्स तथा खनिज पाए जाते हैं। इसमें **वसा की मात्रा बहुत कम होती है तथा कोई हानिकारक कोलेस्ट्रॉल भी नहीं** होता है। इसके कुछ दुष्प्रभाव भी हैं, जैसे इसमें प्रजनन-रोधी गुण होते हैं, इसलिये गर्भवती महिलाओं के लिये इसे अनुशंसित नहीं किया जाता है।
- तेलंगाना स्थित मेडिकोंडा न्यूट्रिएंट्स ने मोरिंगा निर्यात गतिविधियों को योजनाबद्ध तरीके से शुरू करने का समर्थन किया है। इस कंपनी के पास 240 हेक्टेयर में मोरिंगा बागान हैं।

संस्कृति IAS

07 JANUARY 2021

# PT CARD

संस्कृति IAS

## मैग्नेटोटेल्यूरिक (Magnetotelluric)

- मैग्नेटोटेल्यूरिक (MT) एक **भू-भौतिकीय विधि** है, जिसमें भूगर्भिक संरचनाओं एवं गतिविधियों के अध्ययन के लिये **पृथ्वी के चुंबकीय एवं विद्युत क्षेत्रों की भिन्नता का उपयोग** किया जाता है। इस विधि के द्वारा भूकंप उत्प्रेरण की संभावना को बढ़ाने वाले तत्त्वों, जैसे मैग्मा आदि की आवृत्ति को मापा जाता है।
- इस विधि द्वारा 300 से 10,000 मीटर तक की गहराई में उच्च आवृत्तियों को रिकॉर्ड किया जा सकता है। इसके लिये प्राय: तीन प्रमुख भूकंपीय स्रोतों, महेंद्रगढ़-देहरादून फॉल्ट (MDF), सोहना फॉल्ट (SF) और मथुरा फॉल्ट (MF) से मापों को लिया जाता है।
- मैग्नेटोटेल्यूरिक तकनीक को सर्वप्रथम 1940 के दशक में जापानी वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस पर 1950 के दशक में रूसी और फ्रांसीसी भू-भौतिकीविदों द्वारा स्वतंत्र रूप से कार्य शुरू किया गया।

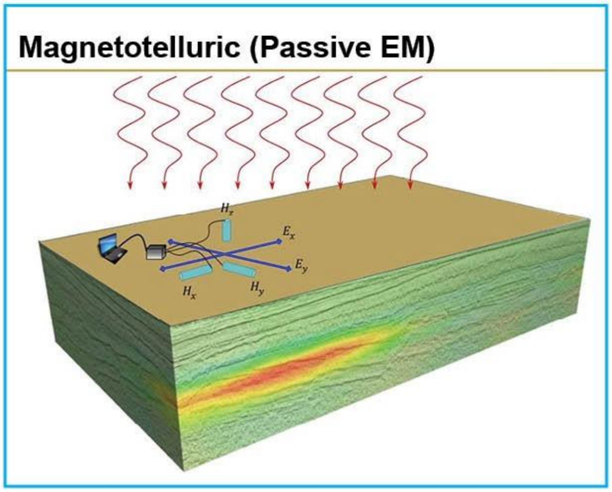


- भूकंपीय खतरे के सटीक अनुमान के साथ-साथ इस जानकारी का उपयोग भूकंप-रोधी इमारतों, औद्योगिक इकाइयों और महत्त्वपूर्ण संरचनाओं जैसे अस्पतालों और स्कूलों आदि को डिज़ाइन करने के लिये भी किया जा सकता है। वाणिज्यिक उपयोगों में हाइड्रोकार्बन (तेल और गैस) अन्वेषण, भू-तापीय अन्वेषण, कार्बन अनुक्रम, खनन अन्वेषण तथा हाइड्रोकार्बन और भूजल की निगरानी में भी इसका उपयोग किया जा सकता है।

संस्कृति IAS

08 JANUARY 2021

# PT CARD

## लॉन्गिट्यूडिनल एजिंग स्टडी (Longitudinal Ageing Study)

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 'लॉन्गिट्यूडिनल एजिंग स्टडी ऑफ इंडिया (LASI) वेव -1' नामक एक रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट देश की बढ़ती जनसंख्या के स्वास्थ्य, आर्थिक व सामाजिक निर्धारकों तथा बढ़ती उम्र के परिणामों की वैज्ञानिक जाँच का राष्ट्रीय सर्वेक्षण है। यह **विश्व का सबसे बड़ा सर्वेक्षण है जो वृद्ध आबादी के लिये नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण में उपयोगी** होगा।

- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या लगभग 103 मिलियन है, जो देश की कुल जनसंख्या का 8.6% है। लगभग 3% की वार्षिक वृद्धि के साथ वर्ष 2050 तक भारत में वृद्ध लोगों की जनसंख्या 319 मिलियन होने की संभावना है।
- वृद्ध लोगों की लगभग 75% आबादी जीर्ण रोगों से पीड़ित है। लगभग 40% वृद्धों में एक या अधिक प्रकार की विकलांगता तथा लगभग 20% में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ पाई गई हैं।
- इस **सर्वेक्षण में सिक्किम को छोड़कर देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों** के 45 वर्ष व उससे अधिक आयु के लगभग 72,000 व्यक्तियों को शामिल किया गया। इनमें 60 वर्ष और उससे अधिक आयु-वर्ग के 31,000 से अधिक तथा 75 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 6,700 से अधिक वृद्ध शामिल हुए।
- वृद्धजनों की स्वास्थ्य देखरेख के लिये राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज़ मुंबई ने हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया यू.एस.ए., यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड तथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग के सहयोग से इस सर्वेक्षण को पूरा किया है। विदित है कि **प्रत्येक वर्ष 1 अक्तूबर को वृद्धजनों के लिये अंतर्राष्ट्रीय दिवस का आयोजन** किया जाता है।

09 JANUARY
2 0 2 1

# PT CARD

## प्राकृतिक पूंजी लेखांकन और पारिस्थितिकतंत्र सेवा
## (Natural Capital Accounting and Valuation of the Ecosystem Services-NCAVES)

- भारत में प्राकृतिक पूंजी लेखांकन और पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं पर फोरम-2021 का आयोजन जनवरी 2021 में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र के सहयोग से सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।

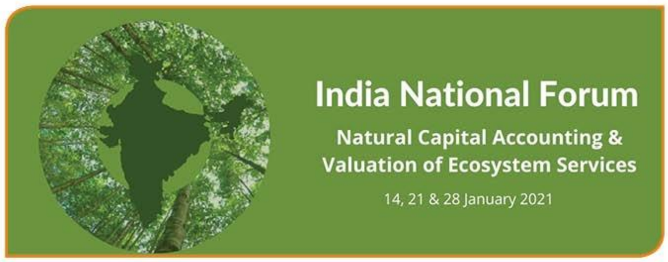


- प्राकृतिक पूंजी लेखांकन (NCA) एक ऐसी पद्धति है जिसका प्रयोग प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग से संबंधित आय और लागत को समायोजित करने के लिये किया जाता है। यह पद्धति वर्ष 2012 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनुमोदित की गई एक रूपरेखा पर आधारित है, जिसे 'पर्यावरणीय आर्थिक लेखा प्रणाली' (SEEA) कहा जाता है।
- यूरोपीय संघ द्वारा वित्तपोषित एन.सी.ए.वी.एस. का क्रियान्वयन संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम तथा जैवविविधता अभिसमय के सचिवालय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है। इस परियोजना में भारत, ब्राज़ील, चीन, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको शामिल हैं।
- इस परियोजना के तहत 'भारत-ई.वी.एल. उपकरण' का विकास भी एक प्रमुख उपलब्धि है, जो विभिन्न अध्ययनों के आधार पर देश के विभिन्न राज्यों की पारिस्थितिकीय सेवाओं की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करने में सक्षम है।
- इस परियोजना में भागीदारी की वजह से सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय को यू.एन.-एस.ई.ई.ए. फ्रेमवर्क के अनुरूप पर्यावरणीय खातों के संकलन को शुरू करने और वर्ष 2018 से वार्षिक आधार पर अपने प्रकाशन 'एनवायरनमेंट स्टेट्स इंडिया' में पर्यावरणीय खातों को जारी करने में मदद मिली है।

7428085757/58 या मिस्ड-कॉल करें-9555-124-124 www.sanskritiIAS.com

# वेनेडियम (Vanadium)

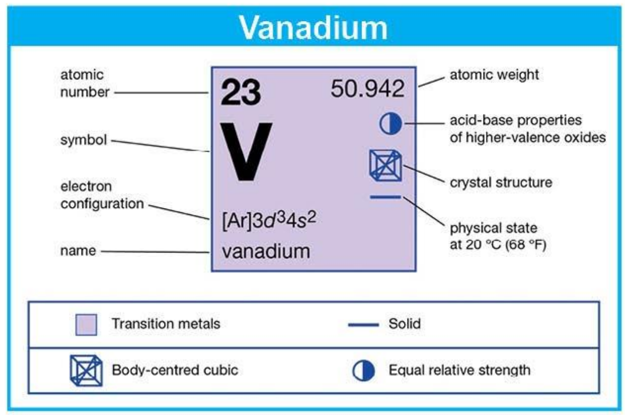


- हाल ही में, अरुणाचल प्रदेश के पापुम पारे ज़िले में डेपो और तमांग क्षेत्रों में पैलियो–प्रोटरोज़ोइक कार्बनलेस फाइलाइट चट्टानों में वैनेडियम के वृहद निक्षेप पाए गए हैं। अरुणाचल प्रदेश को वैनेडियम के प्रमुख उत्पादक राज्य के रूप में देखा जा रहा है जो भविष्य में भारत के वैनेडियम आयात को कम करने में सहायक होगा।
- वेनेडियम (V) की परमाणु संख्या 23 है। यह एक कठोर, सिल्वर-ग्रे (धूसर) रंग की अघातवर्धनीय (Malleable) धातु है, जो पृथ्वी पर पाए जाने वाले दुर्लभ तत्त्वों में से एक है। इसे वैनैडिफेरस मैग्नेटाइट अयस्क (लौह अयस्क) के प्रसंस्करण से एकत्र धातुमल (Slag) के उपोत्पाद के रूप में प्राप्त किया जाता है। यह एक मूल्यवान धातु है जिसका उपयोग स्टील और टाइटेनियम को मज़बूती प्रदान करने के लिये किया जाता है।
- विश्व में वैनेडियम का सबसे बड़ा भंडार चीन में हैं, इसके बाद रूस और दक्षिण अफ्रीका का स्थान है। चीन विश्व के 57% वैनेडियम उत्पादन के साथ इसका सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। भारत इसका एक महत्त्वपूर्ण उपभोक्ता है लेकिन प्राथमिक उत्पादक नहीं है। जी.एस.आई. के आँकड़ों के अनुसार, भारत ने वर्ष 2017 में विश्व भर में उत्पादित लगभग 84,000 टन वैनेडियम के 4% का उपभोग किया है।

संस्कृति IAS

12 JANUARY 2021

# PT CARD

संस्कृति IAS

## जोखिम आधारित आंतरिक लेखा परीक्षा फ्रेमवर्क (RISK BASED INTERNAL AUDIT FRAMEWORK)

- भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकों की शासन व्यवस्था को मज़बूत करने के लिये जोखिम आधारित आंतरिक लेखापरीक्षा फ्रेमवर्क (RBIA) ज़ारी किया है। आर.बी.आई. द्वारा बैंकों को बेसल समिति और अंतर्राष्ट्रीय आंतरिक लेखा परीक्षा मानकों को अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- बैंकों के दृष्टिकोण में एकरूपता लाने तथा सर्वश्रेष्ठ व्यवहार के अनुसार आंतरिक लेखा कार्यों के संचालन के लिये बैंकों को निम्न सलाह दी जाती है:
  - **प्राधिकरण, पदानुक्रम और स्वतंत्रता:** आंतरिक लेखापरीक्षण के प्रमुख (HIA) बैंक के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी होंगे, जिनके पास स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता होगी।
  - **योग्यता:** लेखापरीक्षकों को बैंकिंग परिचालन, लेखा, सूचना प्रौद्योगिकी, डेटा विश्लेषिकी और फोरेंसिक जाँच आदि क्षेत्रों का अनुभव तथा उनमें पेशेवर दक्षता होनी चाहिये।
  - **कार्यकाल:** HIA को दीर्घावधि (न्यूनतम तीन वर्ष) के लिये नियुक्त किया जाएगा।
- आंतरिक लेखा कार्य को आउटसोर्स नहीं किया जा सकता, आवश्यकता पड़ने पर पूर्व-कर्मचारियों सहित विशेषज्ञों को अनुबंध के आधार पर ए.सी.बी. के अधीन नियुक्त किया जा सकता है, यदि बैंक में आवश्यक विशेषज्ञों का अभाव है।

7428085757/58 या मिस्ड-कॉल करें-9555-124-124 www.sanskritiIAS.com

13 JANUARY 2021

# PT CARD

संस्कृति IAS

## संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के सहायक निकाय
## (Subsidiary Bodies of UNSC)

- हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत के स्थाई प्रतिनिधि द्वारा यह घोषणा की गई कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के तीन प्रमुख सहायक निकायों की अध्यक्षता भारत द्वारा की जाएगी। ये तीन निकाय हैं– आतंकवाद-रोधी समिति, तालिबान प्रतिबंध समिति तथा लीबिया प्रतिबंध समिति। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 29 के तहत, सुरक्षा परिषद अपने कार्यों के बेहतर प्रदर्शन के लिये आवश्यक ऐसे सहायक निकायों की स्थापना कर सकती है।

- **आतंकवाद-रोधी समिति (Counter-terrorism Committee):** भारत वर्ष 2022 में आतंकवाद-रोधी समिति की अध्यक्षता करेगा जो कई मामलों में महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सबसे आगे रहा है। विदित है कि भारत ने वर्ष 2011-12 में भी इस समिति की अध्यक्षता की थी। यह समिति संयुक्त राष्ट्र सदस्यों को उनकी सीमाओं के भीतर या बाहर किसी भी प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों को रोकने में सहायता करती है और विभिन्न स्तरों पर मार्गदर्शन प्रदान करती है।
- **तालिबान प्रतिबंध समिति (Taliban Sanctions Committee):** अफगानिस्तान में शांति, सुरक्षा, विकास और प्रगति के लिये अपनी रुचि तथा प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए भारत हमेशा से तालिबान प्रतिबंध समिति को उच्च प्राथमिकता देता है। इस समिति की स्थापना तालिबान से जुड़े किसी भी व्यक्ति, समूह, उपक्रम और संस्था पर प्रतिबंधों की निगरानी के लिये की गई थी।
- **लीबिया प्रतिबंध समिति (Libya Sanctions Committee):** लीबिया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने के लिये भारत, लीबिया प्रतिबंध समिति की अध्यक्षता करेगा। इसकी स्थापना 26 फरवरी, 2011 को लीबिया के विरुद्ध प्रतिबंधों की देखरेख करने के लिये की गई थी।

संस्कृति IAS

14 JANUARY 2021

# PT CARD

संस्कृति IAS

## मीलवॉर्म (Mealworms)

- हाल ही में, यूरोपीय खाद्य सुरक्षा एजेंसी (EFSA) ने मीलवॉर्म (पीले रंग के ग्रब) को मानव भोजन के सुरक्षित स्रोत के रूप में स्वीकृत किया है। विदित है कि यूरोप में पहले से ही खाद्य-सामग्री के रूप में कीटों के बीटल लार्वा का उपयोग किया जाता है। मीलवॉर्म वर्ष 2015 के यूरोपीय संघ के एक विनियमन के तहत जोखिम मूल्यांकन प्रक्रियाओं के अधीन वर्ष 2018 में एफ्सा (EFSA) को सौंपी गई कीटों की पहली अनुमोदित प्रजाति है।

- संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार खानेयोग्य कीट खाद्य असुरक्षा से निपटने में मददगार हो सकते हैं। कीट के मुख्य घटक प्रोटीन, वसा तथा फाइबर होते हैं, जो भावी टिकाऊ तथा कम कार्बन-उत्सर्जक स्रोत प्रदान करते हैं। टेनेब्रियो मोलिटर का लार्वा सामान्यत: पालतू सरीसृपों और मछलियों के भोजन के रूप में उपयोग किया जाता है। मीलवॉर्म यूरोपीय संघ में बिक्री हेतु अपनी तरह का पहला खाद्य हो सकता है।
- यह **मीलवॉर्म की एक डार्कलिंग बीटल प्रजाति टेनेब्रियो मोलिटर का लार्वा रूप** हैं। होलोमेटाबोलिक कीट प्रजातियों की तरह ये चार चरणों– अंडा, लार्वा, प्यूपा और वयस्क से गुज़रते हैं। इसे करी, पास्ता जैसे व्यंजन बनाने तथा बिस्किट, ब्रेड आदि बनाने के लिये सुखाकर आटे के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में कीटों का पहले से ही खाद्य-पदार्थों के रूप में उपयोग किया जाता है। झींगे (Prawn) और डस्टमाईट से संबंधित एलर्जीग्रसित लोगों के लिये टेनेब्रियो मोलिटर लार्वा से निर्मित व्यंजन हानिकारक होते हैं। **यूरोपीय संघ के दो राष्ट्र, ऑस्ट्रिया और जर्मनी कीट-आधारित स्नैक्स के लिये विख्यात** हैं।